Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies
ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (Online)
Vol. 7, Issue 2, October 2021

"Poetic Thoughts of Plato"
"प्लेटो के काव्य संबंधित विचार"

Dr. Maheshkumar J. Vaghela*
Government Arts College, Vallabhipur

पूर्वभूमिका:

समीक्षाशास्त्र का जन्मसर्जनात्मक रचनाओं के गुणदोष की विवेचनातथा श्रेय करसाहित्य के प्रचार–प्रसार हेत ुहोता है।समीक्षाशास्त्र के अंतर्गत यूनानीचिंतकों ने काव्यशास्त्र के बारेमेंसीधे व स्पष्ट रूप से लिखने की जगह अपने संवादोंमें अपनी दार्शनिक्त ाव्यक्त की है।विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता ग्रीक सभ्यता रही है।ग्रीक अर्थात यूनान कइ ंछोटे–बड़े गणराज्यों का समूह है।जिसमें एथेंस, स्पार्टा और मकडूनिया आदि स्वतंत्र गणराज्य थे।इनमें एथेंस और स्पार्टा दो िवरोधी विचारधारा तथा विरोधी जीवन शैली के प्रतीक थे। एथेंस बौद्धिक संपदा और स्पार्टा शारीरिक संपदा के धनीथे। यूनान के इतिहासमे पेरिक्लेस का शासनकाल एथेंस का स्वर्णकाल था इस युगमें विख्यात महान विचारक सुकरात तथा महान दार्शनिक प्लेटो जैसे विद्वान इस युग की देन है।इन सब विद्वानों ने एथेंसको आदर्श गणराज्य बनाने के लिए अपने दार्शनिक विचार प्रस्तुत किए हैं। इस प्रयत्न के परिणामस्वरूप एथेंसमें एक पिढी का विकास हुआ जैसे सुकरात, प्लेटो और अरस्तू। प्लेटो के गुरु सुकरात का जीवन सिद्धांत था परिणाम परिवेश और परिवार की चिंताछोड़ कर एक निष्ठाभाव से सत्य का अनुसंधान करना।सुकरात मानते थे कि गॉड वही है जो उपयोगी है।प्लेटो ने अपने गुरु सुकरात की विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए द रिपब्लिक नामक ग्रंथमें अपने दार्शनिक विचार प्रस्तुत किए हैं।'द रिपब्लिक'में प्लेटो ने आदर्शगणराज्य के सिद्धांतसृष्टि शास्त्र ज्ञानमीमांसा तथा अनुकरण सिद्धांत दिए हैं।

प्लेटो का जिवन :

महान् यूनानी दार्शनिक प्लेटो का जन्म 427–428 ई. पूर्व में एथेन्स के एक कुलीनपरिवारमेंहुआथा।प्लेटो का वास्तविक नाम एरिस्तोकलीज था, उसके अच्छे स्वास्थ्य के कारण उसके व्यायाम शिक्षक ने इसका नाम प्लाटोन रख दिया। प्लेटो शब्द का यूनानी उच्चारण 'प्लातोन' है। अरबी में प्लातोन का अपभ्रंश हुआ अफलातून हूआ ।

*Dr. Mahesh J. Vaghela, Assistant Professor (Hindi), Government Arts College, Vallabhipur, Dist. Bhavnagar (Gujarat) 364001

प्लेटो के जन्म से 4 वर्ष पहले स्पार्टा ने एथेंस पर आक्रमण किया जो 27 वर्षों तक चला तथा अंततः 404 ईसा पूर्व में एथेंस की पराजय के साथ समाप्त हुआ। अर्थात प्लेटो का शैशव यौवन युद्ध में बीता तथा एथेंस की शर्मनाक हार को प्लेटो ने अपनी आंखों से देखा। एथेंस की सारी बौद्धिकता कला धरी की धरी रह गई। स्पार्टा के शौर्य के आगे एथेंस ढह गया। प्लेटों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा तथा उनके चिंतन की दिशा इसी के अनुरूप ढल गई। अपनी पुस्तक 'गणतंत्र' में वे कहते भी हैं– 'गुलामी मृत्यु से भी भयावह है।' यह पंक्ति वही लिख सकता है जिसने गुलामी सही हो। इसी कारण प्लेटों को शौर्य वीर का महत्व ज्ञात हुआ।

एथेंस की पराजय के पाँच वर्षों बाद सुकरात को मृत्यु–दंड दे दियागया।सुकरात के विचार रूढ़ि विरोधीथे।रूढ़िवादीउनकोबेहदनापसंदकरतेथे। सुकरात बुद्धि और तर्क के अतिरिक्त किसी भी बाह्य सत्ता का आदेश मानने को तैयार नहीं थे। उनकी विचार–प्रक्रिया में भावना का स्थान न था। लोकतांत्रिक एथेंस में उन्हें मृत्युदण्ड दे दिया गया। इस प्रकार इन घटनाओं ने एथेंस की बौद्धिकता, कलात्मकता, लोकतांत्रिकता के प्रति प्लेटो की आस्था डिगा दी।

इस प्रकार प्लेटो के मानस का निर्माण हुआ। इसीलिए प्लेटो के संपूर्ण चिंतन का मुख्य उद्देश्य आदर्श राज्य–निर्माण रहा। प्लेटो का यह आदर्शवाद समकालीन समाज के पतन की गहरी प्रतिक्रिया का परिणाम है।

प्लेटो के काव्य संबंधी विचार :

प्लेटो आलोचक से पहले दार्शनिक थे। अतः

१.प्लेटो सत्य की आलोचना के बदले दार्शनिक ढंग से सोचते है।

२.आलोचनात्मक ढंग से कुछ नहीं लिखा "द रिपब्लिक और अन्य ग्रंथ में उनके विचार प्रस्तुत किए है।

प्लेटो ने अपने समय के होमर द्वारा रचित " इलियड और ओडिसी" दो समर्थ महाकाव्य की अकाव्यत्मक्ता को स्पष्ट किया है। प्लेटो न्दपअमतेंस प्कमं (सार्वत्रिक विचार) को ही सत्य और शाश्वत मानते है। सार्वत्रिक विचार का उपयोगिता मूलक में और उपयोगिता मूलक से कलागत मूलक में परिवर्तन होता है। इसका अर्थ है कि न्दपअमतेंस प्कमं से ेन्मनिस प्कमं में और ेन्मनिस प्कमं से ठमंनजपनिस प्कमं का निर्माण होता है। इसे प्लेटो बढई (बंतचमदजमत) के द्वारा निर्मित पलंग का उदाहारण देते है। पलंग का विचार न्दपअमतेंस में था यह विचार बढई (बंतचमदजमत) के मन आया और उन्होंने पलंग का निर्माण किया । और किसी चित्रकार ने इसे देखकर पलंग का सुंदर चित्र बनया। अतः प्लेटो कहते है कि यह सत्य से तिसरे स्थान पर है । अतः यह अनुकरण का अनुकरण है । प्लेटो ने कलाओं को अनुकरण का अनुकरण कहा। और अनुकरण सिद्धांत दिया।

प्लेटो ने अनुकरण सिद्धांत में काव्य और साहित्यकार पर तीन आरोप लगाये।

१. काव्य कला अनुकरण का अनुकरण है अतः असत्य है ।

२. असत्य से जन्म लेनेवाली काव्यकला नगर में असत्य की सृष्टी करती है ।

३. काव्य कला अनुकरण का अनुकरण है जो सत्य से तीन गुना दूर है इसलिए आदर्शनगर में कल्पना

का साम्राजय फैलाने वाले कवियों और सर्जकों को सम्मानित नगर से बहर कर देना चाहिए ।

प्लेटो का स्पष्ट मत है कि "काव्य में एसे विषयों की चर्चा होनी चाहिए जो सद–मूल्यों पर आधारित हो ! विवेकहीन, अपरिपक्व, असंगत, अनैतिक, मन पर दुष्प्रभाव डालने वाले साहित्य का पूर्णतः निषेध होना चाहिए, चाहे वह सत्य ही क्यों न हो।" " साहित्य नैतिक संस्कारों के निर्माण का साधन होना चाहिए। प्लेटो काव्य को इश्वरीय उन्माद कहते है।

निष्कर्ष :

''यदि हम राज्य में सत्य, न्याय और सदाचार की रक्षा करना चाहते हैं तो कविता का बहिष्कार करना होगा! कवियों को राज्य से निकाल देना होगा'' (प्लेटो)

निष्कर्ष रूप से देखा जाए तो प्लेटो के काव्य–संबंधी प्रतिमान साहित्येतर हैं। प्लेटो का सपना आदर्श राज्य के निर्माण का है। प्लेटो के आदर्श राज्य के निर्माण में जो बाधक तत्त्व हैं प्लेटो उनको बाहर कर देने के पक्षधर हैं चाहे वह काव्य ही क्यों न हो।

इन बिंदुओं के आधार पर प्लेटो को काव्य विरोधी ठहरा दिया जाता है। परंतु चीजें इतनी भी सरल नहीं होतीं। निस्संदेह प्लेटो के समय का काव्य वासना में डूबा था। युद्ध में पराजित एथेंस की गरिमा तार–तार हो रही थी। रोम जलता रहे और नीरो बंशी बजाता रहे यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है। ऐसे में यदि प्लेटो जैसा दार्शनिक काव्य के प्रति घोर आलोचनात्मक हो जाए तो आश्चर्य कैसा! सन 1962 में भारत चीन युद्ध के बाद (जिसमें भारत पराजित हुआ था) 'दिनकर' जैसा गांधीवादी कवि परशुराम की प्रतीक्षा लिखता है तो इसमें गलत क्यां है ?

==========

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

१. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेन्द्रनाथ शर्मा, मयूर पेपरबैक्स प्रकाशक दिल्ली

२. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : भगीरथ मिश्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी